REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ.मोहनलाल ठाकुर
प्राचार्य,मिलेनियम बीएड. कॉलेज, बुरहानपुर (म. प्र.)

प्रस्तावना :

शिक्षा समाज की रीढ़ है तथा प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की आधार शिला है। शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया का आधार प्राथमिक शिक्षा है। जब तक प्रत्येक बालक–बालिका को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त नहीं होती, तब तक उच्च शिक्षा या रोजगारपरक शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है।

संविधान की 45 वीं धारा के अनुसार संविधान को लागू किये जाने के समय से 10 वर्ष के अंदर सभी बच्चों के लिये, जब तक कि वह 14 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं कर लें, निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्रदान करनी थी। तथा इसकी पूर्ति 1960 तक हो जानी चाहिए थी। इस दिशा में अनेक कमेटियों तथा कमीशनों ने भी अपनी सिफारिशें दी परन्तु अनेक कठिनाइयों व बाधाओं के कारण संविधान के इस लक्ष्य की पूर्ति नहीं हो पाई।

देश के सभी बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त हो सके इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु शासन द्वारा वर्ष 2002–2003 में सर्व शिक्षा अभियान की शुरूआत की गई। सर्व शिक्षा अभियान के द्वारा 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को सन् 2010 तक उपयोगी एवं प्रासंगिक शिक्षा प्रदान करना था।

सर्व शिक्षा अभियान के उददेश्यों में मुख्य रूप से विद्यार्थियों की दर्ज संख्या में वृध्दि करना, विरतता को कम करना, विद्यार्थियों की उपस्थिति में बढ़ोत्तरी करना तथा बालक एवं बालिकाओं में लैंगिक असमानताएँ दूर करना इत्यादि बिंदुओं का सामावेश किया गया है।

सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने से पूर्व चली आ रही योजनाओं की कमियों तथा इनके क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाने हेतु शोधकों के द्वारा समय–समय पर कई कार्य किये गये हैं जिसमें प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन से सम्बन्धित भी कई शोध शामिल हैं : सिंह (1970) ने दो भारतीय गाँवो में साक्षरता का अध्ययन किया, चिकेरमाने (1979) ने विद्यालय से बाहर के बच्चों के लिये प्राथमिक औपचारिकेतर शिक्षा का अध्ययन किया, नटराजन (1981) ने गिरियक ब्लॉक (पटना) के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया, दवे (1981) ने राजस्थान में औपचारिकेतर शिक्षा के क्रियान्वयन की स्थिति का सर्वेक्षण किया, देसाई, पटेल एवं शाह (1982) ने गुजरात राज्य के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया गुप्ता (1983) ने मध्यप्रदेश राज्य में विभिन्न संस्थाओं के द्वारा संचालित औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम (उम्र समूह 09 से 14 वर्ष) का आलोचनात्मक अध्ययन किया, औलख (1983) ने राज्यस्थान में औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन की व्यूह रचना का विकास किया, गांगुली (1984) ने विश्वविद्यालयों के द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया, त्रिवेदी (1984) ने प्रौढ़ शिक्षा में विरतता का अध्ययन किया, पाती (1984) ने नवसाक्षरों की पठन आवश्यकताओं एवं रुचि का विश्लेषण किया, निम्बालकर (1985) ने गोवा में चल रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया, खजूरिया एवं राही (1985) ने कुरूक्षेत्र में क्रियान्वित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया राजलक्ष्मी (1986) ने 09–14 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिये औपचारिकेतर शिक्षा के कुछ पहलुओं का मूल्यांकन किया पोद्दार (1986) ने औपचारिकेतर शिक्षा केन्द्रों का पर्यवेक्षण, प्रशासन तथा प्रौढ़ शिक्षा का मूल्यांकन किया, नानी पन्तुलु (1986) ने 09–14 उम्र समूह के औपचारिकेतर शिक्षा के शैक्षणिक पहलुओं का मूल्यांकन किया, मूर्ति (1986) ने आंध्रप्रदेश के प्राथमिक अवस्था के औपचारिकेतर शिक्षा केन्द्रों का मूल्यांकन प्रशासनिक दृष्टिकोण से किया, यादव (1987) ने

उत्तरप्रदेश में 09–14 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिये औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोध अध्ययनों से यह विदित होता है कि मूल्यांकन के क्षेत्र में शोध अध्ययनों में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत खण्डवा जिले में विद्यार्थियों की उपस्थिति पर कोई शोध कार्य पूर्व में नहीं हो पाया है। इसलिये प्रस्तुत शोध ''खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन'' की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

न्यादर्श

खण्डवा जिले के 7 विकासखण्डों के 110 प्राथमिक विद्यालयों का चयन दैव न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों की उपस्थिति के आकलन हेतु किया गया।

तालिका 1.1 में खण्डवा जिले के 7 विकासखण्डों की प्राथमिक शालाओं की कुल संख्या तथा न्यादर्श के आकार एवं प्रकार को दर्शाया गया है :

तालिका : 1.1 खण्डवा जिले के 7 विकासखण्डों की प्राथमिक शालाओं की कुल संख्या तथा न्यादर्श के आकार एवं प्रकार को दर्शाती हुई तालिका

क्र.	खण्डवा जिले के विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श का प्रकार	प्राथमिक विद्यालयों की कुल संख्या	न्यादर्श का आकार
1.	खण्डवा	दैव	167	17
2.	पुनासा	दैव	194	20
3.	छैगाँवमाखन	दैव	128	13
4.	पंधाना	दैव	211	21
5.	ळरसूद	दैव	104	11
6.	खालवा	दैव	220	22
7.	बलड़ी (किल्लौद)	दैव	54	06

स्रोत : सर्व शिक्षा अभियान केन्द्रीय कार्यालय, खण्डवा (म.प्र)

उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार, उपस्थिति की जानकारी को एकत्र करने के लिये शोधक के द्वारा सर्व शिक्षा अभियान उपस्थिति प्रपत्र का विकास किया गया।

सर्व शिक्षा अभियान उपस्थिति प्रपत्र में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत मासिक उपस्थिति एवं औसत वार्षिक उपस्थिति को लिया गया। यह उपस्थिति खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों तथा सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों की ली गई।

प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान के केन्द्रीय कार्यालय प्रकोष्ठ में जाकर सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के जिला परियोजना समन्वयक से सम्पर्क स्थापित कर अपने शोधकार्य का उद्देश्य बताकर उनसे प्रदत्त संकलन की अनुमति ली गई। सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत अध्ययनरत् विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति की जानकारी हेतु सर्व शिक्षा अभियान के केन्द्रीय कार्यालय प्रकोष्ठ से उन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नाम एवं पते लिये गये ताकि प्रदत्त संकलन करने हेतु उनसे सम्पर्क स्थापित करने में सहायता मिले। इसके पश्चात् न्यादर्श में चयनित विद्यालयों में जाकर वहाँ

पदस्थ प्रधानाचार्यों से सम्पर्क स्थापित किया गया तथा उन्हें अपना परिचय देकर अपने शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवा कर उनसे शोधकार्य हेतु अनुमति प्राप्त की गई फिर इन प्राथमिक विद्यालयों के सम्बन्धित शिक्षकों से विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति की जानकारी ली गई।

प्रदत्त विश्लेशण

प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

प्रस्तुत शोध 'खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन', में इस शोध के उद्देश्य खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन करना, का आकलन करने के लिये सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत अध्ययनरत् प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने के चार वर्ष पूर्व तथा सर्व शिक्षा अभियान प्रारम्भ होने के चार वर्ष पश्चात् की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति को तालिका 1.2 से 1.4 में प्रस्तुत कर परिणामों विवेचना की गई है।

तालिका 1.2 में खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाया गया है :

तालिका : 1.2 खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाती तालिका

वर्ष	विद्यार्थियों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति प्रतिशत (%) में				
	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
1999–2000	64	65	68	69	71
2000–2001	69	71	73	75	76
2001–2002	65	67	70	72	74
2002–2003	63	64	67	70	73
2003–2004	68	70	73	75	78
2004–2005	71	73	76	78	81
2005–2006	75	71	80	83	85
2006–2007	77	80	82	85	87

तालिका 1.2 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में वर्ष 1999–2000 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 64 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 65 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 68 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 69 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 71 प्रतिशत है। वर्ष 2000–2001 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 69 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 75 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 76 प्रतिशत है। वर्ष 2001–2002 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 65 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 70 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 72 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 74 प्रतिशत है। वर्ष 2002–2003 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 63 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 64 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 70 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 73 प्रतिशत है।

तालिका 1.2 में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में, वर्ष 2003–2004 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 68 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 70 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 75 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 78 प्रतिशत है। वर्ष 2004–2005 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 71 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 76 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 78 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 81 प्रतिशत है। वर्ष 2005–2006 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 75 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 80 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 83

प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 85 प्रतिशत है। वर्ष 2006–2007 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 77 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 80 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 82 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 85 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 87 प्रतिशत है।

तालिका 1.2 में खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों के प्रदत्तों तथा सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों के प्रदत्तों के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की वर्षवार औसत वार्षिक उपस्थिति में किसी वर्ष वृद्धि हुई है तथा किसी वर्ष कमी हुई है। जैसे–वर्ष 1999–2000 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 64 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 65 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 68 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 69 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 71 प्रतिशत थी जबकि वर्ष 2000–2001 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 69 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 75 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 76 प्रतिशत थी। अतः वर्ष 1999–2000 की तुलना में वर्ष 2000–2001 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत वृध्दि हुई । इसी प्रकार वर्ष 2001–2002 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 65 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 70 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 72 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 74 प्रतिशत थी। वर्ष 2000–2001 की तुलना में वर्ष 2001–2002 में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत कमी हुई। इसी प्रकार वर्ष 2002–2003 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 63 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 64 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 70 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 73 प्रतिशत थी। अतः वर्ष 2001–2002 की तुलना में वर्ष 2002–2003 में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत कमी हुई। खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में निरन्तरता का अभाव है किन्तु खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पश्चात् के प्रदत्तों का निरीक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में वर्षवार क्रमिक रूप में सार्थक वृद्धि हुई। जैसे–वर्ष 2003–2004 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 68 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 70 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 75 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 78 प्रतिशत थी। वर्ष 2004–2005 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 71 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 76 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 78 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 81 प्रतिशत थी। वर्ष 2005–2006 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 75 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 80 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 83 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 85 प्रतिशत थी। वर्ष 2006–2007 में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 77 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 80 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 82 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 85 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 87 प्रतिशत थी।

खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति में वर्षवार निरन्तर वृद्धि न होने के अग्र कारण हो सकते हैं–शासन के द्वारा लागू की गई विभिन्न योजनाओं जैसे–ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, शिक्षक समाख्या प्रायोजना, विकलाँग बच्चों की समेकित शिक्षा योजना, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षा गारंटी योजना इत्यादि का क्रियान्वयन ठीक प्रकार से न हो पाने के कारण उनका प्रभाव विद्यार्थियों की उपस्थिति में अपेक्षित वृद्धि होने पर नहीं हुआ चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों में ज़्यादातर माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति गम्भीर एवं जागरूक नहीं पाये जाते हैं जिसके कारण वे बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय नहीं भेजते हैं जिससे प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में बच्चों की उपस्थिति में कमी पायी जाती है अतः इसके लिये ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के माता–पिता को जागरूक करने हेतु जन–जागरूकता अभियान के क्रियान्वयन में कमी हुई इसके अतिरिक्त विद्यालयों में स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था न होना, सभी विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं के लिये प्रसाधनों की पृथक व्यवस्था न हो पाना, विद्यालयों में खेल के मैदानों की व्यवस्था न होना, शिक्षण की परम्परागत् विधियों का प्रयोग, अनाकर्षक विद्यालय भवन, विद्यालय में कक्षा का नीरस वातावरण तथा शिक्षकों का गैर–शैक्षणिक कार्यों जैसे–चुनाव कार्यों, जनगणना, मतगणना इत्यादि में व्यस्त रहने के कारण विद्यार्थियों पर ध्यान न दे पाना इत्यादि इन सभी कारणों एवं अन्य कारणों से खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की उपस्थिति में निरन्तर वृद्धि नहीं हुई।

खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों के प्रदत्तों के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में वर्षवार क्रमिक रूप में सार्थक वृद्धि हुई। इसके अग्र कारण हो सकते हैं–खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के साथ ही पूर्व में चली आ रही योजनाओं जैसे–ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड, डी.पी.ई.पी., शिक्षा गारंटी योजना, महिला समाख्या, मध्याह्न भोजन, इत्यादि के सही क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देना, प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को मुफ्त में पाठ्य–पुस्तकों का वितरण करना, मुफ्त में गणवेशों का वितरण करना, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वितरण करना, नए विद्यालय भवनों की स्थापना करना, पुराने एवं जर्जर विद्यालय भवनों का नवीनीकरण करना, विद्यालय भवन तक पहुँचने वाले मार्गों का दुरूस्तीकरण करना, विद्यालयों में मूलभूत भौतिक संसाधनों जैसे–टाटपट्टी, फर्नीचर, श्यामपट्ट, प्रकाश की समुचित व्यवस्था करना, पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था करना, विद्यालयों में प्रसाधनों की व्यवस्था करना, विद्यालयों में खेल के मैदानों की व्यवस्था करना, विद्यालय में विद्यार्थियों के भोजन के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था करना, विद्यालयों में शिक्षण–सहायक सामग्रियों की व्यवस्था करना, प्राथमिक विद्यालयों में नए शिक्षकों की भर्ती करना, विद्यार्थियों के लिए रहवासी एवं अरहवासी सेतु पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना, शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना, शिक्षक–पालक संघों का गठन करना, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करना, ग्रामीण क्षेत्रों में पालकों को अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने हेतु जागरूक करना, बच्चों का पारिवारिक सर्वेक्षण करना, बाल–मेलों का आयोजन करना इत्यादि।

तालिका 1.3 में खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के बालकों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाया गया है :

तालिका : 1.3 खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के बालकों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाती तालिका

वर्ष	बालकों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति प्रतिशत (%) में				
	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
1999–2000	66	67	69	71	73
2000–2001	71	73	74	77	78
2001–2002	67	69	72	73	76
2002–2003	64	65	67	72	74
2003–2004	69	71	73	76	79
2004–2005	72	75	77	80	82
2005–2006	76	79	81	85	87
2006–2007	78	82	83	87	89

तालिका 1.3 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में वर्ष 1999–2000 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 66 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 69 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 71 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 73 प्रतिशत है। वर्ष 2000–2001 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में 71 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 74 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 77 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 78 प्रतिशत है। वर्ष 2001–2002 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 67 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 69 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 72 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 73 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 76 प्रति,ात है। वर्ष 2002–2003 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में 64 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 65 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 72 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 74 प्रतिशत है।

तालिका 1.3 में खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में वर्ष 2003–2004 में बालकों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में 69 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 73 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 76 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 79 प्रतिशत है। वर्ष 2004–2005 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में 72 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 75 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 77 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 80 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 87 प्रतिशत है। वर्ष 2005–2006 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में 76 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 79 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 81 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 85 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 87 प्रतिशत है। वर्ष 2006–2007 में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 78 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 82 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 83 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 87 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में 89 प्रतिशत है।

तालिका 1.4 में खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाया गया है :

तालिका : 1.4 खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाती तालिका

वर्ष	बालिकाओं की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति प्रतिशत (%) में				
	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
1999–2000	61	63	66	67	69
2000–2001	66	68	71	73	74
2001–2002	63	65	67	70	72
2002–2003	62	63	66	68	71
2003–2004	67	69	72	73	76
2004–2005	69	71	74	76	79
2005–2006	73	75	79	80	83
2006–2007	76	78	81	82	85

तालिका 1.4 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व चार वर्षों में वर्ष 1999–2000 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 61 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 63 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 66 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 67 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं 69 प्रतिशत है। वर्ष 2000–2001 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 66 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 68 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 73 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं 74 प्रतिशत है। वर्ष 2001–2002 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 63 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 65 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 67 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 70 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं 72 प्रतिशत है। वर्ष 2002–2003 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 62 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 63 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 66 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 68 प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं 71 प्रतिशत है।

तालिका 1.4 में खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में वर्ष 2003–2004 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 67 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 69 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 72 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 73 प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में 76 प्रतिशत है। वर्ष 2004–2005 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 69 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 71 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 74 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 76 प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में 79 प्रतिशत है। वर्ष 2005–2006 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 73 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 75 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 79 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 80 प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में 83 प्रतिशत है। वर्ष 2006–2007 में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में 76 प्रतिशत, कक्षा दूसरी में 78 प्रतिशत, कक्षा तीसरी में 81 प्रतिशत, कक्षा चौथी में 82 प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में 85 प्रतिशत है।

तालिका 1.3 तथा तालिका 1.4 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में एवं सर्व ाक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में बालकों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति, बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है। इसके अग्र कारण हो सकते हैं–ग्रामीण क्षेत्रों में ज़्यादातर अभिभावकों का बालिकाओं की अपेक्षा बालकों की शिक्षा पर ध्यान देना, बालिकाओं को घरेलू कार्यों में व्यस्त रखकर नियमित रूप से विद्यालय न भेजना, पालकों में बालिका–शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी होना, विद्यालयों में बालिकाओं के लिए पृथक से महिला प्रसाधनों की कमी होना, विद्यालयों में महिला शिक्षिकाओं की कमी होना, इत्यादि कारणों से बालकों की तुलना में बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत कमी हुई।

तालिका 1.3 तथा तालिका 1.4 के निरीक्षण से यह भी ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों की अपेक्षा सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में प्राथमिक कक्षा के बालक तथा बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई।

खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों की अपेक्षा सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में प्राथमिक कक्षा के बालक तथा बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत वृद्धि होने के अग्र कारण हो सकते हैं– सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे–ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड, डी.पी.ई.पी., शिक्षा गारंटी योजना, पढ़ना–बढ़ना, मध्याह्न भोजन आदि का क्रियान्वयन सुचारू रूप से करना, विद्यालयों का समय–समय पर पर्यवेक्षण करना, विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना, बालक एवं बालिकाओं को मुफ्त में पाठ्य–पुस्तकों का वितरण करना, गणवेशों का वितरण करना, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बालक–बालिकाओं को छात्रवृत्ति का वितरण करना, विद्यालयों में पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था करना, बालिकाओं के लिए पृथक से महिला प्रसाधनों की व्यवस्था करना, बालिकाओं के शिक्षण हेतु महिला शिक्षिकाओं की भर्ती करना, विद्यालयों में बालिकाओं की उपस्थिति बढ़ाने एवं बालिका शिक्षा पर ध्यान देने हेतु जनजागृति शिविरों का आयोजन करना, ग्राम चौपालों का आयोजन करना, बाल–मेलों का आयोजन करना, शिक्षक–पालक संघ की बैठकों का आयोजन करना, घर–घर जा कर सम्पर्क अभियान करना, विद्यालय के वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा रैलियों का आयोजन करना, सांस्कृतिक नाटकों, लोक–संगीतों एवं खेल प्रतियोगिताओं के द्वारा जन–जागरूकता विकसित करना, विद्यालय के वातावरण को रोचक बनाने का प्रयास करना, विद्यालयों में खेल के मैदानों की व्यवस्था करना, नए शिक्षकों की भर्ती करना, तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर विशेष ध्यान देना इत्यादि।

सन्दर्भ

हिन्दी

अग्रवाल यु.सी. : सर्व शिक्षा अभियान वृहद् लक्ष्य–कमजोर प्रयास, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 22 अंक 3, जनवरी 2004, पृष्ठ 09–14

अग्रवाल, बी.बी. : आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, 1996

नील, एम.के. : सर्व शिक्षा अभियान–क्षेत्रीय प्राथमिकताएँ. आधुनिक भारतीय शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, वर्ष 23, अंक–1, जुलाई 2004, पृष्ठ 3–13.

नील, एम.के. : प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण. प्राइमरी शिक्षक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, वर्ष 29, अंक–3, जुलाई 2004, पृष्ठ 40–42.

पाठक, पी.डी. : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ. आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, 1995.

सिंह, नरेन्द्र कुमार : प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन, प्राथमिक शिक्षक वर्ष 29, अंक–1 जनवरी 2004, पृष्ठ 14–19,

अंग्रेज़ी

Buch, M.B. (ed.) A Survey of Research in Education. Baroda : Center of Advanced Study in Education, 1974.

Buch, M.B. (ed.) Second Survey of Research in Education. Baroda : Society for Educational Research & Development, 1979.

Buch, M.B. (ed.) Third Survey of Research in Education. New Delhi : National Council of Educational Research and Training 1986.

Buch, M.B. (ed.) Forth Survey of Research in Education. Vol I & II New Delhi : National Council of Educational Research & Training 1991.

NCERT, Fifth Survey of Research in Education. Vol I New Delhi : National Council of Educational Research & Training .1997

NCERT, Fifth Survey of Research in Education. Vol II New Delhi : National Council of Educational Research & Training .2000.

NCERT, Sixth Survey of Research in Education. Vol I New Delhi : National Council of Educational Research & Training. 2006

NCERT, Sixth Survey of Research in Education. Vol II New Delhi : National Council of Educational Research & Training. 2007

Website: www.dauniv.ac.in .